UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 101-104

"विद्यालयीन शिक्षा एवं जीवन मूल्य"

प्रो. ऋचा एस. मेहता
(सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शास.महाविद्यालय, सोनकच्छ जिला देवास)

सारांश :
शिक्षा किसी भी उन्नत, सुखी एवं समृद्ध रा" ट्र की आधारशिला है। सम्पूर्ण विश्व के शिक्षाविदों द्वारा निरूपित किये गए शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन करें तो कुछ सर्वमान्य तथ्य उभरकर आते है। इसमें से सबसे प्रमुख एवं सर्वमान्य तथ्य यह है कि शिक्षा का परम उद्देश्य सम्पूर्ण मानवीय जगत का सर्वांगीण विकास करके मानव को पूर्ण मानव बनाना है। एक मानव को पूर्ण मानव बनाने के लिये व्यक्ति में आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास करना, व्यक्ति के भीतर का ववके जागृत करना, मानव की आंतरिक ' ाक्तियों व योग्यताओं का विकास करना, अनुभवों का निर्माण करना, परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की क्षमता उत्पन्न करना, ज्ये" ठ एवं श्रे" ठ मनु" यों द्वारा निर्दि" ट किये गये मार्ग का अनुसरण करने की वृत्ति पैदा करना आदि गुणों को सीापित करना होगा। एक मनु" य के सफल एवं सुखी जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य जो उभरकर आता है, वह यह है कि सुखी एवं सफल मनु" य अर्थात् पूर्ण मानव के निर्माण के लिए 50 प्रतिशत सामग्री नैतिकता एवं सद्चरित्रता का विकास करने वाले जीवन मूल्यों के अर्जन से प्राप्त होती है तथा ' ी" ा 50 प्रतिशत अन्य सभी गुणों एवं दक्षताओं के अर्जन से होती है। जीवन मूल्यों एवं चरित्र के अभाव में मनु" य चाहे जितनी शिक्षा प्राप्त कर लें वह एक जीवित प्शु से भिन्न नहीं होगा। नैतिकता एवं चरित्र मनु" य के आधार है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य दृ" ट करें तो विदित होता है कि मानवीय संवेदना कम होती जा रही है। बंधुत्वभाव व्यवहार से नदारद होते जा रहा है। दया, करूणा, सेवाभावना की वृत्ति में लगातार कमी होती जा रही है। हमारी शिक्षा पद्धति में जीवन मूल्यों की घोर उपेक्षा की जा रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में जीवन मूल्यों की शिक्षा को प्राथमिकता के आधार पर ' ाामिल किया जाए। जीवन मूल्यों में ह्रास के कारण देश अनेक समस्याओं से ग्रसित हो चुका है। इन समस्याओं से निजात पाने एवं संस्कारवान एवं रा" ट्रभक्ति से सम्पन्न नागरिकों के निर्माण के लिए देश की शिक्षा व्यवस्था में जीवन मूल्यों को सीापित कर बाल्यकाल से ही बच्चों को संस्कारित करने के गंभीर प्रयास किये जाने आवश्यक है।

प्रस्तावना :
शिक्षा किसी भी उन्नत, सुखी एवं समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला है। प्रत्येक देश एवं काल में दी जाने वाली शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण सामान्यतः समाज की आवश्यकताओं पर या शिक्षा संचालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। सम्पूर्ण विश्व के शिक्षाविदों द्वारा निरूपित किये गए शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन करें तो कुछ सर्वमान्य तथ्य उभरकर आते है। इसमें से सबसे प्रमुख एवं सर्वमान्य तथ्य यह है कि शिक्षा का परम उद्देश्य सम्पूर्ण मानवीय जगत का सर्वांगीण विकास करके मानव को पूर्ण मानव बनाना है। एक मानव को पूर्ण मानव बनाने के लिये व्यक्ति में आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास करना, व्यक्ति के भीतर का विवेक जागृत करना, मानव की आंतरिक शक्तियों व योग्यताओं का विकास करना, अनुभवों का निर्माण करना, परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की क्षमता उत्पन्न करना, ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ मनुष्यों द्वारा निर्दिष्ट किये गये मार्ग का अनुसरण करने की वृत्ति पैदा करना आदि गुणों को स्थापित करना होगा। पूर्ण मानव बनाने के लिए दो बातें अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहला आदर्श जीवन जीने के लिए व्यक्ति में गुणों को स्थापित करना तथा जीविकोपार्जन कमाने की शक्ति स्थापित करना।

एक मनुष्य के सफल एवं सुखी जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य जो उभरकर आता है, वह यह है कि सुखी एवं सफल मनुष्य अर्थात् पूर्ण मानव के निर्माण के लिए 50 प्रतिशत सामग्री नैतिकता एवं सद्चरित्रता का विकास करने वाले जीवन मूल्यों के अर्जन से प्राप्त होती है तथा शेष 50 प्रतिशत अन्य सभी गुणों एवं दक्षताओं के अर्जन से होती है। जीवन मूल्यों एवं चरित्र के अभाव में मनुष्य चाहे जितनी शिक्षा प्राप्त कर लें वह एक जीवित पशु से भिन्न नहीं होगा। नैतिकता एवं चरित्र मनुष्य के आधार है। सम्पूर्ण विश्व के शिक्षाविद् यह स्वीकार करते है कि अन्य गुणों एवं दक्षताओं के साथ नैतिकता एवं सद्चरित्रता का पोषण करने वाले जीवन मूल्यों को धारण करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। देश प्रेम, देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना को पोषित करने

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 101-104

वाली वृत्ति पैदा करना भी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। कोई भी विधा उसके उद्देश्यों को आधार बनाकर परिभाषित की जाती है। शिक्षा के निर्दिष्ट उद्देश्यों को आधार मानकर विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने शब्दों में शिक्षा को परिभाषित किया है। जॉन डिवी के अनुसार शिक्षा अनुभवों के सतत् पुनर्निमाण द्वारा जीवन की प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास करती है जो उसे अपने परिवेश को नियंत्रित करने तथा अपनी संभाव्यताओं को पूर्ण करने योग्य बनाती है। दो बातें ध्यान देने योग्य है – अनुभवों का पुनर्निर्माण तथा परिवेश को नियंत्रित करके संभाव्यताताओं को पूर्ण करने वाली क्षमताओं का विकास। सुखःदुख, शीत–उष्ण आदि के अनुभव शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों को समान रूप से होते है।

परन्तु शिक्षा अनुभवों के आधार पर प्रत्येक परिस्थिति में लड़ने का साहस उत्पन्न करती है, अनुभवों से लाभान्वित होने की क्षमता पैदा करती है तथा यथार्थ अनुभव, आदर्श अनुभवों के रूप में पुन निर्मित होते है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्तम को प्रकट करना है। इसके लिए विवेक की आवश्यकता होती है तथा विवेक शिक्षा द्वारा ही उत्पन्न होता है अर्थात् मनुष्य में अच्छी वृत्तियों का विकास एवं दुवृत्तियों का शमन शिक्षा के द्वारा ही होता है। व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को अच्छी आदतों में बदल देना ही शिक्षा है। अच्छी आदतों का समूह ही सद्चरित्र कहलाता है, अर्थात् शिक्षा चरित्र निर्माण का कार्य करती है। अतः हमारी शिक्षा केवल जीविकोपार्जन के लिए व्यक्ति को दक्ष बनाने के नहीं होना चाहिए वरन् उसे उच्च स्तर के जीवन मूल्यों के आधार पर होना चाहिए। सत्य, अहिंसा, समता, बंधुत्वभावना, सदाचार, अनुशासन, संयम कर्मशीलता, विनयशीलता, सहनशीलता, सादगी, इमानदारी, धीरज तथा संतोष जो वस्तुतः भारतीय जीवन मूल्य है, का शिक्षा में समावेश होना चाहिए। जब तक शिक्षा में इन जीवन मूल्यों का समावेश नहीं होता, तब तक देश की जनता वास्तविक रूप में सफल एवं सुखी नहीं हो पाएगी।

वर्तमान युग में जीवनमूल्य परम आवश्यक :
वर्तमान वैश्विक परिदृश्य दृष्टि करें तो विदित होता है कि मानवीय संवेदना कम होती जा रही है। बंधुत्वभाव व्यवहार से नदारद होते जा रहा है। दया, करूणा, सेवाभावना की वृत्ति में लगातार कमी होती जा रही है। मानव मन दायित्व निर्पेक्ष हो गया है। अधिकारों के प्रति मनुष्य अधिक सचेत होते जा रहा है तथा दायित्वों का उसे आभास ही नहीं है। राष्ट्रनिष्ठा की भावना समाप्त होती जा रही है। जितने भी प्रकार के भ्रष्ट आचरण मानव मन की कल्पना में आ सकते है, वे सभी समाज में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रहे है। भ्रष्टाचार, शोषण, निर्मम हत्याएँ, भय, आतंक, साम्प्रदायिकता, वैश्विक अशांति, पारस्परिक घृणा, चरित्रहीनता, अपराध, हिंसा यह सब सामान्य जीवन के अंग बन गये है। बेईमानों को समझदार एवं व्यवहारिक तथा इमानदारों को बेवकूफ एवं अडियल की उपाधि दी जाने लगी है।

धैर्य, क्षमाशीलता, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा, ईमानदारी दायित्व बोध जैसी मानवीय वृत्तियों का लोप हो रहा है। चारों और अव्यवस्था, गरीबी, भूख, बेरोजगारी, अशिक्षा व्याप्त है। यह वर्तमान विश्व का यथार्थ है। विश्व के सभी देश कम या अधिक मात्रा में इस समस्या से जूझ रहे हैं। हम एक विशेष समय में जी रहे है, जहाँ हम एक ओर नवीनतम तकनीकी सफलताओं से सुसज्जित हो रहे है, वहीं दूसरी ओर इस नयी तकनीक का उपयोग कर रही आज की पीढ़ी नैतिक मूल्यों के खतरनाक पतन की ओर निरन्तर बढ़ रही है।

जीवन मूल्यों में क्षय का भारत पर प्रभाव :
जीवन मूल्यों के क्षय के कारण भ्रष्टाचार एवं दुराचार के क्षेत्र में अपने देश की भी छवि अग्रणी राष्ट्र की है। सम्पूर्ण सरकारी मशीनरी, निजी क्षेत्र एवं राजनेता का भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। अधिकांश धनाढ़य वर्ग की भौतिक सम्पत्तियाँ आय के स्त्रोत से कई गुना अधिक है। आयकर की चोरी में हाई प्रोफाइल समाज अग्रणी है। शासकीय सेवक कुल कार्य अवधि के आधे समय भी कार्य नहीं करते एवं भ्रष्टाचार में गले–गले तक डूबे हुए है। जीवन मूल्यों की यथोचित एवं आवश्यक शिक्षा नहीं मिलने के कारण समाज में भौतिक साधन तो बढ़े है परन्तु सुख एवं शांति हवा होते जा रहे है।

शिक्षित एवं समृद्ध परिवारों में आत्महत्या की संख्या बढ़ती जा रही है, पढ़े लिखे परिवारों में तलाक लेने की संख्या तेजी से बढ़ रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक प्राप्त करने में किसी भी स्तर तक गलत काम करने से हिचकिचाता नहीं है। विद्यालयों में छात्रों में जीवन मूल्यों को स्थापित करने से अधिक महत्व केवल अच्छे अंक लाने को दिया जाता है। परिवार में माता–पिता अपने बच्चों को केवल सफल होते देखना चाहते है न कि सद्चरित्र बनते। मध्यप्रदेश के चिकित्सा शिक्षा में हुए व्यापम घोटाले ने इस मानसिकता को पूर्ण रूप से उजागर कर दिया है। इस घोटाले में दोषी पाये गए छात्रों में से सर्वाधिक छात्र एवं उनके पिता उच्च

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 101-104

शिक्षित एवं समृद्ध परिवारों के है। इनमें से कई के पिता ख्यातनाम चिकित्सक है। अब यदि चिकित्सक जैसे उच्च शिक्षित व्यक्तियों में जीवन मूल्यों का अभाव है तो आम व्यक्तियों की क्या दशा होगी ? यह एक विचारणीय विषय है।

वर्तमान समय में देश में अधिकांश लोग अपने कार्य क्षेत्र में अधिक कुशल व्यक्ति को देखकर अपने को अधिक कुशल बनाने पर ध्यान देने के स्थान पर किसी भी गलत तरीके द्वारा उनसे आगे बढ़ने का प्रयास करते है। एक विद्यार्थी का उद्देश्य संस्कारों एवं मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर केवल ऐसे ज्ञान को प्राप्त करने का हो गया है, जो उसे अधिक धनवान बना सकें। खिलाड़ी खेल भावना से खेलकर आनंद प्राप्त करने के स्थान पर किसी भी गलत तरीके द्वारा जीतने में अधिक आनंद का अनुभव करने लगे है। एक अफसर उच्च तनखा प्राप्त करने के बाद भी प्रत्येक कार्य करने के लिए अतिरिक्त धन (रिश्वत) प्राप्त करना चाहता है। एक राजनेता समाजसेवा करने के स्थान पर केवल राजनीति को व्यवसाय एवं अधिक धन एवं बल प्राप्त करने का साधन मानने लगा है। एक शिक्षक केवल पाठ्यक्रम की विषयवस्तु पढ़ाकर अपने आपको श्रेष्ठ शिक्षक मानने लगा है। एक व्यापारी पर्यावरण, ग्राहकों का स्वास्थ्य, व्यापार नीति आदि को ताक पर रखकर केवल अपने व्यवसाय का लाभ बढ़ाना चाहता है।

इन सभी ने किसी न किसी विद्यालय एवं महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है। इनकी यह प्रवृत्ति इस बात की ओर इशारा करती है कि हमारी शिक्षा पद्धति में जीवन मूल्यों की घोर उपेक्षा की जा रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में जीवन मूल्यों की शिक्षा को प्राथमिकता के आधार पर शामिल किया जाए।

विद्यालय शिक्षा एवं जीवन मूल्य :
जीवन मूल्यों में ह्रास के कारण देश अनेक समस्याओं से ग्रसित हो चुका है। इन समस्याओं से निजात पाने एवं संस्कारवान एवं राष्ट्रभक्ति से सम्पन्न नागरिकों के निर्माण के लिए देश की शिक्षा व्यवस्था में जीवन मूल्यों को स्थापित कर बाल्यकाल से ही बच्चों को संस्कारित करने के गंभीर प्रयास किये जाने आवश्यक है। इस हेतु निम्न प्रयास किये जाने चाहिए –

- विद्यालय एवं महाविद्यालयीन पाठ्यक्रमों में अन्य विषयों के समान ही जीवन मूल्यों से संबंधित नैतिक शिक्षा का भी विषय प्रत्येक कक्षा में शामिल किया जाना चाहिए।
- भारतीय संस्कृति से परिचित करवाने के लिए बच्चों के पाठ्यक्रम में महापुरूषों और वैदिक कथाओं के प्रेरक प्रसंगों एवं कहानियों को शामिल किया जाना चाहिए।
- जीवन मूल्यों की शिक्षा देना पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से हटकर है अतः अध्यात्म तथा जीवन मूल्यों से संस्कारित शिक्षकों को नियुक्ति की जानी चाहिए।
- अन्य विषयों जैसे सरल, सुबोध एवं रसप्रद साहित्य पुस्तकों की रचना पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जीवन मूल्यों का व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए विद्यार्थियों को अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, कारागार, अस्पताल, पुलिस थाने आदि की मुलाकात करायी जानी चाहिए।
- प्रत्येक धर्म के अच्छे जीवन मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल कर बच्चों को सभी धर्मों का आदर करना सिखाया जाना चाहिए।
- धर्म, सम्प्रदाय, जाति, रंग आदि के कारण विश्व में भूतकाल में हुई जन एवं धन की हानि के तथ्यों एवं आँकड़ों को पाठ्यक्रम में शामिल कर बच्चों के इनके दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देना चाहिए ताकि बच्चों में बंधुत्व की भावना का विकास हो सके।
- शिक्षा के क्षेत्र में न्यून वेतन, न्यून अधिकार, अत्यधिक कर्तव्य, प्रेरणा की कमी के कारण उच्च शिक्षित एवं संस्कारित शिक्षकों का आना निरन्तर कम होता जा रहा है। सरकार को इस दिशा में यथोचित प्रयास करना चाहिए ताकि शिक्षित एवं संस्कारित व्यक्ति इस क्षेत्र में आए तथा एक सुशिक्षित एवं संस्कारित जीवन मूल्यों से परिपूर्ण देश का निर्माण किया जा सकें।
- विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अच्छे व्यवहार एवं चरित्रवान विद्यार्थियों को भी वैसे ही पुरस्कृत किया जाना चाहिए जैसे अच्छे अंक लाने वाले छात्रों को किया जाता है।
- छात्रों में इस संस्कार को पूर्ण रूप से स्थापित करने की कोशिश करना चाहिए कि अपनी योग्यता बढ़ाकर ही अच्छे परिणाम हासिल करना चाहिए न कि गलत कार्यों के द्वारा।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 101-104

- छात्रों के माता–पिताओं को सलाह दी जानी चाहिए कि घर में प्रेरक एवं अच्छा साहित्य रखें तथा घर के माहौल में तनाव नहीं आने दे क्योंकि इसका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।
- छात्रों में राष्ट्र निष्ठा सर्वोपरि है यह संस्कार अच्छे से स्थापित किया जाना चाहिए।
- छात्रों को इस बात का ज्ञान दिया जाना चाहिए कि प्रकृति से प्राप्त निःशुल्क उपहारों का अपव्यय नहीं करना चाहिए। उन्हें पर्यावरण का सम्पूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए।
- छात्रों को सिखाया जाना चाहिए की जीवन मूल्यों के आधार पर जीवन व्यतीत करने पर सुख एवं शांति मिलेगी तथा इसके अभाव में जीवन दुःख एवं अशांति से ग्रसित हो जाएगा इसके लिए यथोचित उदाहरण देकर समझाया जाना चाहिए।

उपसंहार :

वर्तमान में कई विद्यालयों में उपरोक्त में से कई प्रयास किए जा रहे है। इसका परिणाम छोटे बच्चों में देखने में आ रहा है। बच्चे पर्यावरण एवं देश के प्रति कर्तव्यों के जागरूक बन रहे है। परन्तु यह प्रयास अभी बहुत कम मात्रा में हो रहे है। अतः सरकार द्वारा जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा अनिवार्य कर संस्कारित एवं जीवन मूल्यों से परिपूर्ण पूर्ण मानव के निर्माण द्वारा देश को सफल, शांतिपूर्ण एवं समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. नैतिक मूल्य और भाषा–संयोजक सम्पादक – सेवाराम त्रिपाठी प्रकाशक, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. प्रतियोगिता दर्पण – अंक अक्टूबर 2009, अप्रेल 2010, सितम्बर 2011
3. कोठारी अतुल (2009) 'मूल्यों की शिक्षा' शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
4. ई–लायब्रेरी (2015)
5. ओझा, एस.के. (2013) समाज शास्त्र मेरठ – अरिहंत पब्लिकेशन।
6. समाचार पत्र–पत्रिकाएँ।